समाचार वाणी
ख़बर जो करें असर !

नाशिक | Monday, 24 August 2026

खवड्या डोंगर पर iPhone EMI विवाद से परिवार मे मंचा कोहराम, मां की आखिरी गुहार- 'तुम्हारे साथ रहूंगी, लेकिन मुझे छोड़कर मत जाओ'

Sanket Morankar Published on 22 Aug 2026

महाराष्ट्र के छत्रपति संभाजीनगर में खवड्या डोंगर पर हुई दर्दनाक घटना ने पूरे इलाके को झकझोर दिया है। **iPhone की EMI को लेकर परिवार मे हुंए विवाद के बाद 19 वर्षीय कुणाल चांदगुडे खवड्या डोंगर पहुंच गया। उसे वापस लाने के लिए उसके माता-पिता ने करीब तीन घंटे तक समझाने की कोशिश की, लेकिन हालात बेहद दुखद मोड़ पर पहुंच गए और एक ही परिवार के तीन लोगों की जान चली गई।**

घटना से पहले पहाड़ पर मां द्वारा बेटे को मनाने की कोशिश और उससे हुई बातचीत की जानकारी भी सामने आई है। मां ने बेटे को भावनात्मक रूप से समझाते हुए उसके साथ रहने तक की बात कही, लेकिन कुणाल किसी की बात सुनने की स्थिति में नहीं था।

iPhone की EMI को लेकर घर में हुआ था विवाद

जानकारी के अनुसार, कुणाल ने iPhone किस्तों यानी EMI पर खरीदा था। कुछ समय से इसकी किस्तों को लेकर समस्या चल रही थी। घर में खर्च के लिए पैसे मिलने और मोबाइल की किस्तों को लेकर कुणाल का अपने पिता के साथ विवाद होता था।

बताया जा रहा है कि इन पारिवारिक मतभेदों का कुणाल के मन पर गहरा असर पड़ा था। वह इस बात से परेशान था कि उसकी बातें नहीं सुनी जा रही हैं और उसकी इच्छाएं पूरी नहीं हो रही हैं।

घटना से पहले कुणाल ने कथित तौर पर अपना iPhone, घड़ी और गले की चांदी की चेन भी उतारकर फेंक दी थी।

तीन घंटे तक माता-पिता करते रहे बेटे को समझाने की कोशिश

घर से निकलने के बाद कुणाल खवड्या डोंगर पहुंच गया और पहाड़ के ऊंचे हिस्से पर जाकर खड़ा हो गया। उसके माता-पिता भी उसके पीछे वहां पहुंचे।

दोनों ने बेटे को वापस आने के लिए काफी देर तक समझाने की कोशिश की। बताया गया है कि करीब **तीन घंटे तक कुणाल को समझाने का प्रयास किया गया।**

स्थिति की गंभीरता को देखते हुए अग्निशमन विभाग की टीम भी मौके पर पहुंची। हालांकि कुणाल नीचे आने के लिए तैयार नहीं हुआ।

मां ने बेटे से की भावुक अपील

घटना से पहले मां ने बेटे को मनाने के लिए बेहद भावुक अपील की। सामने आई जानकारी के अनुसार, मां ने उससे कहा कि अगर उसका पिता के साथ विवाद है तो वह उसका साथ देगी।

मां ने कथित तौर पर कहा—

"तुम्हारा पप्पा के साथ विवाद है ना, देखो, मै अंभी मंगलसूत्र निकालकर फेकं देती हूं। तुम्हारे पिता को छोड़ देती हूं, तुम्हारे साथ रहूंगी, हम दोनों साथ रहेगें, लेकिन मुझे छोड़कर मत जाओ।"

मां की इस भावुक अपील का उद्देश्य बेटे को सुरक्षित रूप से वहां से वापस लाना था। लेकिन कुणाल मानसिक तनाव की स्थिति में किसी की बात मानने को तैयार नहीं था।

बेटे को रोकने के प्रयास में पिता का संतुलन बिगड़ा

कुणाल को कगार से पीछे लाने की कोशिश के दौरान उसके पिता भी उसे रोकने के लिए आगे बढ़े। इसी दौरान उनका संतुलन बिगड़ गया और वे कुणाल के साथ नीचे गिर गए।

मां ने अपनी आंखों के सामने पति और बेटे को गिरते हुए देखा। इस घटना से वह भी बेहद सदमे में आ गईं। सामने आई जानकारी के अनुसार, इसके बाद उन्होंने भी पहाड़ से छलांग लगा दी।

इस दर्दनाक घटना में **मां, पिता और बेटे तीनों की मौत हो गई।**

"मुझे जीने में दिलचस्पी नहीं, मेरी लाइफ का कोई समाधान नहीं"

घटना से पहले कुणाल की मानसिक स्थिति को लेकर भी महत्वपूर्ण जानकारी सामने आई है। बताया जा रहा है कि वह अपनी मां से कह रहा था कि उसकी कोई बात नहीं सुनता और उसे जीवन में कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा।

उसने कथित तौर पर कहा था—

"मां, मेरी कोई बात नहीं सुनता। मुझे जीने मे दिलचस्पी नहीं है। मेरी लाइफ का कोई समाधान नहीं है, कुछ नहीं होने वाला।"

उसकी इन बातों से अंदाजा लगाया जा सकता है कि वह उस समय बेहद तनावपूर्ण मानसिक स्थिति से गुजर रहा था।

92 प्रतिशत अंक हासिल किए थे, डॉक्टर बनने का था सपना

कुणाल पढ़ाई में अच्छा था। उसने हाल ही में दसवीं की परीक्षा में **92 प्रतिशत अंक** हासिल किए थे और आगे चलकर डॉक्टर बनने का सपना देख रहा था। उसने अभी 11वीं कक्षा में प्रवेश लिया था।

जानकारी के अनुसार, चांदगुडे परिवार मूल रूप से अंबड तालुका के धनगर पिंपलवाड़ी का रहने वाला था और पिछले करीब **18 वर्षों से शहर मे रंह रहा था।**

इतनी कम उम्र में पढ़ाई और भविष्य को लेकर सपने देखने वाले कुणाल का इस तरह परिवार के साथ जीवन खत्म हो जाना कई गंभीर सवाल खड़े करता है।

घटना ने उठाए मानसिक स्वास्थ्य और आर्थिक दबाव पर सवाल

खवड्या डोंगर की घटना ने केवल एक परिवार के दर्दनाक अंत को सामने नहीं रखा है, बल्कि युवाओं पर बढ़ते मानसिक दबाव, पारिवारिक संवाद की कमी और महंगी उपभोक्ता वस्तुओं की EMI से जुड़े आर्थिक तनाव पर भी सवाल खड़े किए हैं।

किसी भी आर्थिक या पारिवारिक विवाद की स्थिति में युवा के व्यवहार में अचानक बदलाव, निराशा या जीवन के प्रति नकारात्मक बातें दिखाई दें तो परिवार को इसे गंभीरता से लेना चाहिए। ऐसे समय में बहस के बजाय शांत बातचीत और विशेषज्ञ सहायता लेना महत्वपूर्ण हो सकता है।

खवड्या डोंगर की यह घटना एक परिवार के लिए बेहद दर्दनाक अंत लेकर आई। iPhone की EMI और पारिवारिक मतभेद से शुरू हुआ तनाव इतना बढ़ गया कि माता-पिता अपने बेटे को बचाने के प्रयास मे खुद भी जान गंवा बैठे।

मां की बेटे को रोकने की आखिरी कोशिश और तीन घंटे तक उसे समझाने का प्रयास इस घटना की सबसे भावुक तस्वीर सामने रखता है। वहीं, 92 प्रतिशत अंक हासिल करने वाले और डॉक्टर बनने का सपना देखने वाले कुणाल की मौत यह सवाल भी छोड़ जाती है कि **युवाओं के मानसिक तनाव और आर्थिक दबाव को समय रहते कैसे पहचाना और संभाला जाए।**

DISCLAIMER: the views/contents expressed/presented herein, within this advertorial and promotional feature are the sole and exclusive responsibility of individual clients/expert/their authorised representative/Sanket Morankar, to which effect, publication house/its representative/affiliates are not responsible/liable whatsover.